वर्तमान और पारम्परिक शिक्षा के बीच तुलनात्मक अध्ययन

(Comparative Study between present and Traditional Education)

''जीवन अगर बचाना है, तो मास्क जरूर लगाना है''

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशिका:

JV,nडॉ. सीमा पांडे
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,
जयपुर (राज.)

शोधार्थी

शारदा महारिया

शिक्षा विभाग
ज्योति विद्यापीठ, जयपुर
(मान्य विश्वविद्यालय) जयपुर, राजस्थान
वर्ष–2021–22

''वर्तमान और पारम्परिक शिक्षा के बीच तुलनात्मक अध्ययन''

1. प्रस्तावना :

शिक्षा का वास्तविक अर्थ, कुछ सीखकर अपने आप को पूर्ण बनाना है। इसलिए शिक्षा को मानव–जीवन की आँख कहा जाता है। शिक्षा मनुष्य को जीवन के प्रति सही दृष्टि प्रदान कर योग्य बनाती है। हमेशा प्रगतिशील कार्य की ओर अग्रसर करती है। जिससे मनुष्य उचित जीवन जी सकें। परन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थी उन्नत तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्ष बाद भी भारत में शिक्षा का वैश्विक स्तर प्राप्त नहीं हो पाया है।

वर्तमान शिक्षा पूर्णतः अंग्रेजी माध्यम की ओर अग्रसर होने के कारण देहाती लोगों के लिए चिन्ता का मुख्य विषय है। जिससे ग्रामीण शिक्षा घिसी–पिटी होने के कगार पर पहुँच चुकी है। भारतीय आधुनिक शिक्षा पद्वति पर लॉर्ड मैकाले का प्रभाव आज भी स्पष्टतः दिखाई देता है, भारतीय परिवेश में हिन्दी माध्यम का स्थानीय स्तर पर अधिक बोल–बाला होने के कारण वर्तमान अंग्रेजी शिक्षा का मौलिक स्वरूप आज तक विद्यार्थियों के समझ में नहीं आया है।

वास्तविकता में शिक्षा से सुयोग्य नागरिक तैयार होते है। जो जीवन को योग्य और कामयाब बनाते है। वे अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग रहते है। क्योंकि वर्तमान शिक्षा अपने दायित्वों के निर्वाह में सफल नहीं हो पाई है। जिससे विशेषकर युवा पीढ़ी में असंतोष व्याप्त हो गया है। शिक्षा का उद्देश्य हमेशा सार्थक जीवन की ओर अपने आप को प्रेरित करना है। परन्तु वर्तमान शिक्षा में कुछ विषय केवल परीक्षा उर्त्तीण करने के लिए पढ़ाए जाते हैं। चाहे वे जीवन व्यवहार के लिए उपयोगी हो या ना हो। ऐसे विषयों की वर्तमान में कोई आवश्यकता नहीं है। जो विद्यार्थियों के विकास में सहायक नहीं है।

भारत में शिक्षा का वास्तविक तरीका पारम्परिक शिक्षा ही है। जिससे वह वही पर पूर्ण तरीके से शिक्षा ग्रहण कर एवं उसे कैसे आचार–विचार में लाया जाए। पारम्परिक कक्षाओं में विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों व अध्यापकों के बीच उठने बैठने, वाद–विवाद और उनकी संगति करने से बहुत सारा शैक्षणिक व सामाजिक ज्ञान सीखने को मिलता है। पारम्परिक शिक्षा में एक निश्चित कार्यक्रम, आमने–सामने संचार और सख्त अनुशासन होता है।

पारम्परिक शिक्षा जो भारत में गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था कहलाती थी। वैसी शिक्षा व्यवस्था अब कहीं नहीं है, यह प्रायः लुप्त हो गई है। मानव सभ्यता के इतिहास की यह सबसे बड़ी भूलों में से एक है। एक पारम्परिक पाठ्यक्रम स्थापित दिशा निर्देशों और प्रथाओं का पालन करता है। यह शब्द सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को पारिभाषित करता है।

वर्तमान में पारम्परिक शिक्षा की बहुत आलोचना की जाती है। कई शिक्षाविद् और पेशेवरों लोगों ने शिक्षा के वैकल्पिक स्त्रोतों की उचित व्याख्या की है। जिसमें पारम्परिक शिक्षा के साथ–साथ ज्ञानवर्धक तथा व्यवसायिक पाठ्यक्रम भी पढ़ाये जाते है। जिसमें मुख्य विषय तथा ऐच्छिक विषय शामिल होते है। मुख्य विषयों में आमतौर पर गणित, विज्ञान, इतिहास और अंग्रेजी विषय शामिल है।

पारम्परिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में ब्लॉक या इकाइयों का प्रस्तुतीकरण शामिल होता है। छात्रों की उपलब्धि और प्रगति को मापने के लिए परीक्षण के तौर पर पारम्परिक पाठ्यक्रम को मानको पर मापा जाता है। वर्तमान में पारम्परिक शिक्षा का पाठ्यक्रम बदल रहा है। जिससे अंग्रेजी माध्यम की संस्थाओं ने अपने पैर जमा लिए है। पारम्परिक शिक्षा का भारतीय जीवन और दर्शन में बहुत महत्व है। जिसका वर्णन करना ना केवल, नामुमकिन है बल्कि असंभव भी है। भारतीय शिक्षा की आधारभूत बुनियाद पारम्परिक शिक्षा में ही छिपी हुई है।

वर्तमान शिक्षा पद्वति को सात तरीके बुरी तरह से जकड़े हुए है। जिसमें मस्तिष्क, दण्ड, परीक्षा, कुरूप भवन, अत्यधिक कार्य, स्वाभिमान रहित अध्यापक और संकुचित मनोवृत्ति के माता–पिता। वर्तमान पैटर्न के अनुसार विद्यार्थियों को बहुत अधिक पुस्तकें पढ़नी पड़ती है। समस्त विषयों का अधिक अध्ययन करना पड़ता है।

आजकल हमारी शिक्षा की व्यवस्था वास्तव में दोष युक्त हो गई है। जिसमें तत्काल सुधार की आवश्यकता है। ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिए। वर्तमान शिक्षा को तीन भागों में बांटा गया है।

1. शारीरिक शिक्षा
2. मानसिक शिक्षा
3. आध्यात्मिक शिक्षा

मनुष्य में जब तक अपनी राष्ट्रीय धार्मिकता, जातीय, सामाजिक और पारिवारिक मान्यताओं अथवा परम्पराओं के प्रति कुशाग्री बुद्दि नहीं होगी। व्यक्तिगत अथवा सामूहिक उन्नति की आशा दुराशा मात्र है। मानुषी और दैवी कार्यो की महत्ता के सम्मुख भी हमको नतमस्तक होना चाहिए।

वयोवृद्ध जनों का सम्मान, दुर्बल और बालकों को अपना वरदान प्रदान करना हमारा कर्त्तव्य है। सद्गुणों और सद्व्यवहारों के प्रति भी हमको श्रृद्धा का भाव रखना चाहिए। क्योंकि ये सब मनुष्यत्व के गुण है। प्रत्येक जाति, प्रत्येक समुदाय, प्रत्येक धर्म और प्रत्येक राष्ट्र के लिए हमारे हृदय में प्रेम का भाव हों।

2. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :

- **केन्द्रीय मंत्रीमण्डल की सिफारिशों** में 24 जुलाई, 2020 को उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में वर्तमान शिक्षा की नीति और संशोधन की मांग रखी थी। जिसे सरकार ने सशर्त स्वीकार कर मन्जूरी प्रदान की। जिसमें नई शिक्षा नीति और विश्वविद्यालय शिक्षा नीति का तुलनात्मक अध्ययन किया। भारत सरकार द्वारा

सम्पूर्ण देश में एक समान शिक्षा नीति लागू करने का फैसला किया गया। राजीव गांधी सरकार के बाद मोदी सरकार की सबसे मजबूत शिक्षा नीति की पहल है।

- **<u>नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति</u>**, 2020 में स्कूल शिक्षा सम्बन्धी प्रावधान किये गए हैं, जिसमें नई शिक्षा नीति में 5+3+3+4 का चयन किया गया। 30 जुलाई, 2020 को नई शिक्षा नीति 34 वर्ष पुरानी शिक्षा प्रणाली में बदलाव किया गया। 24 सितम्बर, 2020 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रत्येक भाषा का अध्ययन किया गया। छात्रों के उज्जवल भविष्य को ध्यान में रखते हुए विषय चयन प्रणाली को भी प्राथमिकता दी गई।
- **<u>भारतीय शिक्षा का इतिहास, 2017</u>** प्राचीन/परम्परागत भारत में शिक्षा व्यवस्था के साथ–अनुशासन, साहित्य, भाषा और व्याकरण का सटीक अध्ययन किया जाता था। जिसमें 1840ई. तक भारत में गुरूकुल की प्रथा चलती आ रही थी। मैकाले के प्रयास द्वारा भारत की परम्परागत शिक्षा व्यवस्था का अन्त हुआ। परिणामस्वरूप भारत में कई गुरूकुल बन्द हुए। उनके स्थान पर कान्वेंट और पब्लिक स्कूल खोले गए।
- **<u>प्राची, शर्मा अप्रैल 2009</u>** ने ''शिक्षा के बाधक तत्वों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोष'' विषय पर अध्ययन किया। वर्तमान परिस्थितियों में पूर्व जैसी परिस्थितियों का वर्णन नहीं था। वर्तमान शिक्षा में पुरूषों तथा स्त्रियों को समान अधिकार प्राप्त है। समयानुसार वातावरण और सोच में परिवर्तन आया। प्राचीन शिक्षा में पुरूषों के समान स्त्रियों को अधिकार नहीं थे। वर्तमान शिक्षा में सबके लिए शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया है।

3. समस्या का औचित्य :

- हमारे देश में पारम्परिक शिक्षा का प्राचीनस्वरूप लगभग समाप्त हो गया है। जिसका स्थान दरअसल वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने ले लिया है। जिसमें पुरातन शिक्षा को लेकर किसी प्रकार का कोई मेल–जोल ही नहीं है। वर्तमान शिक्षा

नीति/पद्वति में इनका स्थान पब्लिक तथा कान्वेंट स्कूलों ने ले लिया है। पारम्परिक शिक्षा में समस्या का समाधान अपने ढंग से किया जाता था, जबकि आधुनिक शिक्षा में इनका हल नवीनतम तकनीकियों और बारीकियों के माध्यम से किया जाता है।

- कई राष्ट्रों की शिक्षा का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ है कि पारम्परिक शिक्षा और वर्तमान शिक्षा में काफी अन्तर पाया जाता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पारम्परिक पूर्णतः समाप्त हो गई है, जिसका प्राचीन स्वरूप कहीं पर भी स्पष्ट दिखाई नहीं देता है। प्राचीन शिक्षा में समस्या का समाधान न्यायोचित तथा तर्क संगत हुआ करता था, जबकि वर्तमान शिक्षा में मशीनरी और तकनीकियों का सहारा लिया जाता है।

भावी पीढ़ी का भी वर्तमान में प्रचलित कम्प्यूटर शिक्षा की ओर अधिक है। जिसमें तकनीकी शिक्षा का अधिक समावेश है।

4. **समस्या कथन** :

''वर्तमान और पारम्परिक शिक्षा के बीच तुलनात्मक अध्ययन''

(Comparative Study between present and Traditional Education)

5. **तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण**:

(i) **वर्तमान शिक्षा**—कम्प्यूटरीकृत शिक्षा, ऑन लाइन शिक्षा और तकनीकी शिक्षा वर्तमान युग की महत्वपूर्ण दोनों में से एक है। जिसमें शिक्षा का औचित्य पूर्णतः कम्प्यूटर पर आधारित है। वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा का माध्यम इंग्लिश अधिक हो गया है। भारत की मातृभाषा हिन्दी का वर्चस्व दिनोदिन कम होता जा रहा है।

(ii) **पारम्परिक शिक्षा**—पूर्णतः प्राचीन तथा गुरूकुल पद्वति पर आधारित थे। पारम्परिक शिक्षा वर्तमान में कहीं भी दिखाई नहीं देती है। जिसमें समस्या का समाधान आश्रम या गुरूकुल में रहकर ही किया जाता हों। वर्तमान में इसका अस्तित्व समाप्त हो गया है। नई पैटर्न

पर आधारित शिक्षा में डे बॉर्डिंग, पब्लिक स्कूल और कान्वेंट स्कूलों ने इसका स्थान ले लिया है। भारत में पारम्परिक शिक्षा का माध्यम संस्कृत भाषा में था। परन्तु परिस्थितिवश हिन्दी भाषा का स्थान भी इंग्लिश भाषा ने ले लिया है।

प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य **''वर्तमान और पारम्परिक शिक्षा का तुलनात्मक रूप से अध्ययन''** करना है।

6. समस्या से उभरने वाले प्रश्न :

(i) क्या पारम्परिक शिक्षा और वर्तमान शिक्षा के बीच तुलनात्मक अंतर पाया जाता है?

(ii) क्या ग्रामीण क्षेत्र और आंशिक रूप से शहरी क्षेत्र में पारम्परिक शिक्षा का स्वरूप आज भी दिखाई देता हैं?

(iii) क्या पारम्परिक शिक्षा भारतीय शिक्षा प्राचीन शिक्षा का आधार मानी जाती है?

(iv) क्या वर्तमान शिक्षा ही आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करती है। वर्तमान पारिस्थितियों ने इसकी क्या प्रांसगिकता है।?

(v) क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली से ही विद्यार्थियों का भविष्य सुरक्षित है।

7. शोध कार्य के उद्देश्य :

किसी भी कार्य को लक्ष्य तक पहुंचाने तथा उसे अंतिम रूप देने के लिए निम्नलिखित उद्देशों का निर्धारण करना अत्यन्त आवश्यक होता है। अतः प्रस्तावित शोध कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैः–

(i) वर्तमान और पारम्परिक शिक्षा के बीच तुलनात्मक अध्ययन को ज्ञात करना।

(ii) वर्तमान शिक्षा के भौतिक स्वरूप का अध्ययन करना तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता का विस्तारित अध्ययन करना।

(iii) पारम्परिक शिक्षा की वर्तमान में आवश्यकता का सारगर्भित अध्ययन करना।

(iv) वर्तमान और पारम्परिक शिक्षा के बीच मूलभूत अंतर का विस्तारपूर्वक अध्ययन करना।

(v) पारम्परिक शिक्षा और वर्तमान शिक्षा में बुनियादी पूर्ण चुनौतियों का तथात्मक वर्णन करना।

8. **परिकल्पनाएँः**

प्रस्तावित लघुशोध प्रबन्ध में शोधार्थी ने शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया है। परिणामतः प्रस्तावित शोध कार्य की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैः—

(i) वर्तमान शिक्षा और पारम्परिक शिक्षा में सार्थकता के आधार पर अध्ययन नहीं किया जाता है।

(ii) वर्तमान और पारम्परिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों का बौद्विक आधार पर अध्ययन नहीं किया जाता है।

(iii) ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में कहीं पर भी पारम्परिक शिक्षा के अस्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया जाता है।

(iv) पारम्परिक शिक्षा का उद्देश्य वर्तमान शिक्षा पद्वति के साथ सामंजस्य नहीं कर पाएगा।

9. शोध विधि :

शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित लघुशोध में 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया जाएगा। आवश्यकतानुसार सेम्पलिंग या आनुभविक विधि का भी प्रयोग किया जा सकता है। जिसके आधार पर शोध कार्य को रूचिपूर्ण बनाया जाएगा।

10. जनसंख्या :

प्रस्तावित लघुशोध कार्य में जयपुर जिले के चुनिंदा सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर संचालित संस्थानों को शोध कार्य में शामिल किया जाएगा।

11. न्यादर्श :

प्रस्तावित लघुशोध कार्य में पारम्परिक शिक्षा और वर्तमान शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। जिसमें जयपुर जिले में संचालित संस्थाओं की शिक्षा का विवेचनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

12. शोध के उपकरण :

प्रस्तावित लघुशोध कार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का ही प्रयोग किया जाएगा।

13. सांख्यिकीय:

प्रस्तावित लघु शोध कार्य में निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जायेगा जो कि निम्नांकित है:–

(i) मध्यमान

(ii) माध्य विचलन

(iii) टी–परीक्षण

14. परिसीमांकनः

प्रस्तावित लघु शोध कार्य को निम्नलिखित सीमाओं में बांधकर अध्ययन किया जाएगा।

(i) प्रस्तावित लघुशोध कार्य केवल वर्तमान और पारम्परिक शिक्षा के बीच तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित रहेगा।

(ii) पारम्परिक शिक्षा और वर्तमान शिक्षा नीति का प्रस्तुत लघु शोध कार्य में विस्तारित अध्ययन किया जाएगा।

15. अध्याय योजनाः

शोधार्थी का शोधकार्य निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित है।:–

प्रथम अध्याय – प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय – सम्बन्धित साहित्य की अध्ययन

तृतीय अध्याय – अनुसंधान विधि एवं रूपरेखा

चतुर्थ अध्याय – तथ्यों की विश्लेषण एवं व्याख्या

पंचम अध्याय – शोध, सारांश एवं निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. विजय मुनि शास्त्री, आगम और व्याख्या साहित्य, सन्मति ज्ञान पीठ, आगरा, 1964।
2. डॉ. हीरालाल जैन, भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।
3. डॉ. जयसिंह नीरज, राजस्थानी संस्कृति, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
4. डॉ. रामनाथ पाण्डे, भारतीय कलाएँ एवं उनका विकास, राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर।
5. डॉ. सत्य प्रकाश जैन भारतीय संस्कृति एवं कला महावीर जयन्ती स्मारिका राजस्थान, जयपुर।